DOI: 10.51220/hjssh.v6i1.14

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 6 pp.97 - 99, December, 2011, ISSN. 0975 - 9891

गढ़वाली चित्रकला शैली का उद्भव एवं विकास-संक्षिप्त विवेचन

कुसुम डोबरियाल

संस्कृत विभाग, हे0न0ब0गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौड़ी परिसर, गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Received: 19-8-2011 **Revised:20-10-2011** **Accepted: 24-11-2011**

ABSTRACT

प्रस्तुत लेख में गढ़वाली चित्रकला शैली के उद्भव के विषय में उपलब्ध साहित्य के आधार पर एक विवेचना प्रस्तुत की गयी है साथ ही इस कला की विकास यात्रा पर भी एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यह प्रमाणित करती है कि गढ़वाली चित्रकला का उद्भव निश्चित ही अति प्राचीन है किन्तु श्यामदास जी के वंशजों ने इस दिशा में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

Keywords-गढ़वाली चित्रकला, उदभव, विकास यात्रा

चित्रकला भावना एवं अनुभूति की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। एक चित्रकार के हाथों से खिची चन्द लाइनें कभी-कभी ऐसी गम्भीर एवं अर्थपरक भावनाओं की अभिव्यक्ति कर देती है जिसे किसी अन्य विधा में कठिनाई से ही प्रकट किया जा सकता है। यही एक ऐसी विधा है जिसके अर्थ की गहराई इसके अध्ययनकर्ता की चिन्तन के साथ ही बढ़ती रहती है। चित्रकार अपनी चित्रकला के लिए वही विषय चुनता है जो उसके सामाजिक परिवेश में निरन्तर घटता रहता है, यही कारण है कि किसी समाज की चित्रकला उस समाज में घटित हो रही घटनाओं, संस्कृति तथा सभ्यता का प्रतीक बन जाती है।

गढ़वाली चित्रकला शैली के उद्भव एवं विकास का अध्ययन करने वाले विद्वान अधिकतर चित्रकार मौलाराम के आस-पास ही गढ़वाली चित्रकला का उद्भव वर्णित करते हैं। किन्तु प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्य यह प्रमाणित करते हैं गढ़वाली चित्रकला का उद्भव चित्रकार मौलाराम के जन्म से कई सदियो पूर्व हो चुका था यद्यपि उनका योगदान कला की समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है। डॉ0 वाचस्पति गैरोला[1] ने अपनी पुस्तक में स्पष्ट किया है चित्रकला शैली का विकास पन्द्रहवीं शती में पूर्ण रूप से हो चुका था, जबकि श्री मौलाराम का जन्म सन् 1743ई0 में श्रीनगर गढ़वाल में हुआ। गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग द्वारा सन् 1977-78 में श्रीनगर के निकट अलकनन्दा के तट पर राजराजेश्वर मन्दिर (राणीहाट) के प्रांगण में उत्खनन कार्य किया गया जहाँ लगभग 2500 ई0पू0 का एक बस्ती की पता चला। उनके निष्कर्षों के अनुसार राणीहाट का सांस्कृतिक इतिहास ईसापूर्व छटी शती से लेकर ग्यारवीं शती का माना गया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि चित्रकार श्यामदास गढ़वाली चित्रकला शैली के एक महत्वपूर्ण स्तम्भ थे जो अपने पुत्र केहरदास के साथ सन् 1658 में दिल्ली से श्रीनगर गढ़वालं

©SHARAD

आये तथा एक प्रसिद्ध चित्रकार होने के नाते तत्कालीन गढ़वाल नरेश की चित्रकला में ''तस्वीरदार'' नियुक्त किये गये। गढ़वाल नरेश पृथ्वीपति शाह के समय दाराशिकोह के पुत्र सुलेमान ने भी गढ़वाल में शरण ली तथा चित्रकारिता का कार्य किया। इस प्रकार श्यामलाल तथा पुनः उनके वंशजों द्वारा गढ़वाली चित्रकला शैली निरन्तर विकसित होती रही। इस विधा में शोध करने वाले विद्वान[2-4] यह भी मानते हैं कि कई राजाओं के द्वारा कांगड़ा तथा गुलेर शैली की चित्रकला को भी गढ़वाल में लाया गया जिसका प्रभाव गढ़वाल चित्रकला में प्रतिबिम्बित होता है।

चित्रकार मौलाराम गढ़वाली चित्रकला के एक महत्वपूर्ण स्तम्भ माने जाते हैं जिनका जन्म चित्रकार श्यामदास की पांचवी पीढ़ी में हुआ। डॉ0 शिवप्रसाद डबराल के उद्धरण[5] के अनुसार मौलाराम ने दैवज्ञशैली में अपनी चित्रकला का अभ्यास प्रारम्भ किया था। शनैः-शनैः उन्होने मुगलशैली, राजपूताना शैली तथा हिमाचली शैली को मिलाकर एक नई शैली विकसित की। कलामर्मज्ञ बैरिस्टर मुकुन्दीलाल[6] ने अपने लेखों के माध्यम से मौलाराम को एक चित्रकार की पहचान दी। मौलाराम के चित्रों में तत्कालीन चित्रकला के प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। उदाहरणतः चित्रों के साथ हिन्दी, फारसी, तथा संस्कृत में पद्यों का लिखा होना, हुक्के का बर्तन घण्टी के आकार का होना आदि। उनकी चित्रकला की विषयवस्तु, मुख्यतः देवी-देवता, राजा, राधा-कृष्ण, कृष्ण-गोपियां आदि रहे हैं। ''मोरप्रिया'', ''मयंकमुखी'', ''विप्रलम्भा नायिका'' तथा ''सितार प्रिया'' आदि उनके ख्याति प्राप्त चित्रों में प्रमुख हैं।

चित्रकार मौलाराम के उपरान्त चैत् तथा मणकू दो अन्य चित्रकार हुए जिन्होने गढ़वाली चित्रकला में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई।[7] चित्रकार चैतू की प्रसिद्धतम् कृतियों मे ''यादवियों का हरण'', ''कृष्ण द्वारा कर वसूली'' तथा ''रूक्मणी हरण चित्रमाला'' आदि माने जाते हैं। चित्रकार माणकू की कृतियाँ ''गीत गोविन्द'' तथा ''आँख मिचौनी'' भी प्रमुख कलाकृतियाँ मानी जाती हैं, इसी क्रम में बीसवीं शती के कुछ प्रमुख चित्रकारों की भी गणना अपने समय के प्रतिष्ठित चित्रकारों में की जाती है। जिनमें मनोरथ जोशी, धरणीधर चन्दोला, चमेली जुगराण, द्वारका प्रसाद धूलिया, रणवीर सिंह बिष्ट तथा बी0मोहन नेगी प्रमुख हैं।

गढ़वाली चित्रकला शैली के विषय में डॉ0 सरला रमण[8] लिखती हैं कि गढ़वाली चित्रकला का प्रारम्भ कब हुआ इस सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है क्योंकि भारत का यह खण्ड अपनी एकान्तता और प्राकृतिक विशेषताओं के कारण पूरे देश से अलग-थलग रहा है। डॉ0 शिवप्रसाद डबराल 'चारण'[9] के अनुसार गढ़वाल में प्राचीनकाल से ही तीन चित्र शैलियां चली आ रही हैं-सिद्धशैली, देवशैली एवं लौकिक शैली। 'सिद्धशैली' के चित्रकार बिन्दु, त्रिकोण, वृत तथा चतुरस वर्ग के योग से देवी देवताओं के अनेक प्रकार के यन्त्रों को भोजपत्र, कागज, वस्त्र, आदि पर बनाया करते थे। ''देव शैली'' का प्रयोग ज्योतिशी अपने द्वारा लिखित जन्मपत्री, वर्षफल, पंचाग आदि की पाण्डुलिपियों पर किया करते थे तथा 'लौकिकशैली' के चित्रकार वास्तविक एवं काल्पनिक प्राणियों अथवा वस्तुओं के चित्र बनाते थे।

निष्कर्षतः ऐतिहासिक साक्ष्य यही प्रमाणित करते हैं कि गढ़वाली चित्रकला का उद्भव निश्चित ही

अति प्राचीन है किन्तु श्री श्यामदास के वंशजों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आभार-शोधकर्ती श्रद्धेय गुरुवार प्रो0 जे0के0 गोदियाल के प्रति अपना आभार प्रकट करती है जिनके निर्देशन में शोधकर्ती ने शोधकार्य का सम्पादन किया साथ ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रति भी आभार प्रकट करती है जहाँ से शोधार्थी को आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 वाचस्पति गैरोला, भारतीय चित्रकला, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली
2. बुद्धिबल्लभ ड्यूंडी एवं दुर्गावती ड्यूंडी, 1986, बैरिस्टर मुकुन्दीलाल स्मृति ग्रन्थ पृ0-341
3. डॉ0 यशवन्त सिंह कटौच-1986, वही, पृ0-314
4. गोपाल शर्मा शास्त्री, हिमाचल प्रशस्ति, छटा भाग, काँगड़ा, पृ0-81-83
5. एन0सी0 मेहता, स्टडीज इन इण्डियन पेंटिग्स में उद्धृत 1926
6. बै0 मुकुन्दीलाल, लेख, माडर्न रिव्यू, 1909 एवं गढ़वाल पेंटिग्स
7. डॉ0 यशवन्त सिंह कटौच, गढ़वाल चित्रशैली, 1986, बै0 मुकुन्दीलाल स्मृति ग्रन्थ
8. गढ़वाल की ललित कलायें-बै0 मुकुन्दीलाल जन्मशताब्दी ग्रन्थ, पृ0 382
9. डॉ0 शिवप्रसाद डबराल ''चारण''-उत्तराखण्ड का इतिहास, वीरगाथा प्रकाशन, दोगड्डा, गढ़वाल